विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

दुनिया भर में सांस लेना भी हो गया है दुर्लभ

राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल के अनुसार हर साल 70 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण जान गंवाते हैं। हालत इतनी खराब है कि वैश्विक स्तर पर हर 10 में से 9 लोगों तक शुद्ध हवा नहीं पहुंच पाती है। हवा में मौजूद प्रदूषक कण शरीर की सुरक्षा के लिए मौजूद बाधाओं को पार कर दिल, दिमाग और फेफड़ों पर असर डालते हैं। भारत में बच्चे से बुजुर्ग तक हर समय किसी न किसी सेहत के खतरे से घिरे रहते है। यहाँ एक खतरा कम होने का नाम नहीं लेता की दूसरे की आहट सुनाई देने लगती है। इस बार मीडिया ने यातायात प्रदूषण के खतरे से बच्चों को सावचेत किया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते है जब कोई गर्भवती महिला यातायात से प्रदूषित वातावरण में सांस लेती है तो प्रदूषण के कण शरीर में चले जाते हैं। यह प्रदूषित कण गर्भ में पल रहे बच्चे के फेफड़ों के विकास को प्रभावित कर सकता है। इसलिए जरूरी है कि गर्भवती महिलाएं खुद को यातायात सहित हर प्रकार के प्रदूषण से दूर रखें।

प्रदूषण का अर्थ है हमारे आस पास का परिवेश गन्दा होना और प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। प्रदूषण कई प्रकार का होता है जिनमें वायु, जल और ध्वनि-प्रदूषण मुख्य है। पर्यावरण के नष्ट होने और औद्योगीकरण के कारण प्रदूषण की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है जिसके फलस्वरूप मानव जीवन दूभर हो गया है। महानगरों में वायु प्रदूषण अधिक फैला है। वहां चैबीसों घंटे कल-कारखानों और वाहनों का विषैला धुआं इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दूभर हो गया है। यह समस्या वहां अधिक होती हैं जहां सघन आबादी होती है और वृक्षों का अभाव होता है। कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गंधित जल सब नाली-नालों में घुल मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है। इसी भांति ध्वनि-प्रदूषण ने शांत वातावरण को अशांत कर दिया है। कल-कारखानों और यातायात का कानफाडू शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पों, लाउड स्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है। हमने प्रगति की दौड़ में मिसाल कायम की है मगर पर्यावरण का कभी ध्यान नहीं रखा जिसके फलस्वरूप पेड़ पौधों से लेकर नदी तालाब और वायुमण्डल प्रदूषित हुआ है और मनुष्य का सांस लेना भी दुर्लभ हो गया है। इसके अलावा वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने भी पर्यावरण को बहुत अधिक क्षित पहुंचाई है। विश्व में हर साल एक करोड़ हैक्टेयर से अधिक वन काटा जाता है। भारत में 10 लाख हैक्टेयर वन प्रतिवर्ष काटा जा रहा है।

प्रदूषण कितने प्रकार का है यह हर कोई नहीं जानता है मगर यह बात सब जानते है कि प्रदूषण हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। इससे न सिर्फ हमारे फेफड़ों और दिल को नुकसान पहुंचता है बल्कि अस्थमा जैसी कई बीमारियां भी घेर लेती हैं।

वनों के कटने से वन्यजीव भी लुप्त होते जा रहे हैं। वनों के क्षेत्रफल के नष्ट हो जाने से रेगिस्तान के विस्तार में मदद मिल रही है। प्रदूषण कितने प्रकार का है यह हर कोई नहीं जानता है मगर यह बात सब जानते है कि प्रदूषण हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। इससे न सिर्फ हमारे फेफड़ों और दिल को नुकसान पहुंचता है बल्कि अस्थमा जैसी कई बीमारियां भी घेर लेती हैं। हाल ही में की गई एक स्टडी में सामने आया है कि यातायात प्रदूषण से भारत में साढ़े तीन लाख बच्चों को अस्थमा हो गया है। चीन के बाद इस बीमारी से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला दूसरा देश भारत है।

भारत में सरकारी और निजी स्तर पर जागरूकता के आभाव का कारण बच्चे से बुजुर्ग तक प्रदूषण के चपेट में है और इससे पीड़ित लोगों का आंकड़ा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। बच्चे मासूम है और इस खतरे से नावाकिफ है। बच्चों की सेहत की रक्षा करना हर व्यक्ति का कत्तर्व्य है। हमारे नौनिहाल यदि आँख खोलते ही इसकी चपेट में आ गए तो भविष्य पर सवाल उठाना लाजमी है। यातायात प्रदूषण के अनेक कारण है जिन पर लम्बी बहस की जा सकती है मगर जरुरत इस बात की है की हम उन कारणों को दूर करें जिनकी बदौलत बच्चो की सेहत पर बुरा असर पढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण वे वाहन है जो निरंतर धुंवा छोड़कर बच्चों को आहत कर रहे है। भारत में किसी भी यातायात चैराहे पर खड़े होकर हम देखे तो पाएंगे जहरीली गैस हमारे पर्यावरण को खराब कर रही है। इसके लिए कोई दूसरा नहीं बल्कि हम खुद जिम्मेदार है। आने वाले खतरे को हम खुद आमंत्रित कर रहे है और इसका दोष सरकार पर मंड देते है। पहले हमें खुद को सुधारना होगा फिर यह सीख दूसरों को देनी होंगी तभी सुधारात्मक उपाय सार्थक होंगे और प्रदूषण से बचा जा सकेगा।

लांसेट प्लेनेटरी हेल्थ में प्रकाशित स्टडी के मुताबिक, यातायात प्रदूषण से अस्थमा की बीमारी सबसे ज्यादा चीन में पाई गई। वहां इससे 7 लाख 60 हजार बच्चों को अस्थमा हो गया। ऐसा इसलिए भी हो सकता है क्योंकि चीन बच्चों की सबसे अधिक आबादी वाला दूसरा देश है। इसके अलावा यहां नाइट्रोजन डाइऑक्साइड की मात्रा सबसे अधिक है। इस ऑक्साइड की मात्रा ही यातायात प्रदूषण की ओर इशारा करती है।

अमेरिका स्थित जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक, भारत में अस्थमा की बीमारी के सबसे ज्यादा मामले यानी साढ़े तीन लाख मामले इसलिए थे क्योंकि यहां बच्चों की आबादी अधिक है। वहीं अमेरिका में अस्थमा से पीड़ित बच्चों की संख्या 2 लाख 40 हजार, इंडोनेशिया में 1 लाख 60 हजार और ब्राजील में 1 लाख 40 हजार थी। अगर वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए सख्त कदम उठाए जाएं तो फिर अस्थमा की बीमारी को रोका जा सकता है। वैश्विक स्तर पर देखें, तो इस स्टडी के मुताबिक, हर साल प्रति एक लाख बच्चों में अस्थमा के 170 नए मामले सामने आते हैं और इनमें से बचपन में होने वाले अस्थमा के 13 फीसदी मामले यातायात प्रदूषण से जुड़े होते हैं। इस स्टडी में लांसेट जर्नल ने 194 देशों और दुनिया भर के 125 प्रमुख शहरों को विश्लेषण किया और बताया कि इस लिस्ट में संयुक्त राष्ट्र 24वें स्थान पर, अमेरिका 25वें स्थान पर, चीन 19वें और भारत 58वें स्थान पर है।

–अतिथि संपादक
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर विशेष

'कवि मन के विरल राजनीतिज्ञ'

अटल जी की पंक्तियां मुझे आज भी अत्यन्त प्रिय है, 'मेरे प्रभु!/मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना/गैरों को गले लगा न सकूं/इतनी रूखाई कभी मत देना।'

अटल बिहारी वाजपेयी जी राजनीति के साथ-साथ उससे इतर भी अधिक जाने-पहचाने जाते हैं। शायद इसलिए कि राजनीति से जितने उनके गहरे सरोकार थे उतने ही साहित्य की संवेदना से भी थे। मैंने कई बार यह भी महसूस किया है कि जो बात वह राजनीति में रहते सीधे नहीं कह पाते, वह उनका कवि मन कह देता था। कविताओं से उनके मन को हम बांच सकते हैं। उनके व्यक्तित्व का यह भी सबसे बड़ा गुण था कि वह अलग-अलग विचारधाराओं के दलों के लोगों को भी साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे। मैने यह भी अनुभूत किया कि वह दिल से बहुत बड़े थे।

मुझे लगता है, सच को सच कहने का साहस हर किसी में होता नहीं है पर वाजपेयीजी अच्छा कार्य किसी विरोधी दल के नेता ने भी किया है तो उसकी वह खुलकर सराहना करते थे। याद है, 1971 में जब बांग्लादेश का निर्माण हो गया तब विपक्ष में प्रथम पंक्ति के नेता अटलजी ही थे। पाकिस्तान की करारी हार के साथ बांग्लादेश के निर्माण के लिए किए प्रयासों के लिए उन्होंने सदन में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को 'अभिनव चंडी दुर्गा' की उपाधि तक दे दी थी। पर सत्ता को केवल अपने हाथों ही केन्द्रित करने की मंशा पर उन्होंने 80 के दशक में जनसभाओं में गांधी पर कविताएं लिखकर उन पर व्यंग्योक्ति में प्रहार भी कम नहीं किया था। उस दौर में उनकी सुनाई वह कविताएं आज भी याद है, 'इंदिरा गांधी नम्बर एक/नम्बर दो है कौन? /नारी नम्बर एक/बाकी सब दस नम्बरी।'

अटलजी छोटेपन से सदा दूर रहने को कहते थे। उनकी कविता की यह पंक्तियां मुझे आज भी अत्यन्त प्रिय है, 'मेरे प्रभु!/मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना/गैरों को गले लगा न सकूं/इतनी रूखाई कभी मत देना।' कुशल वक्ता, हाजिरजवाब और विनोदप्रिय भी कम कहां थे!

वह 1957 में मात्र 33 वर्ष की आयु में ही पहली बार संसद सदस्य बन गए थे। लोकसभा में उनके दिए भाषण आज भी इसलिए याद किए जाते हैं। मुझे आज भी 1959 में सदन में दिया गया उनका वह उद्बोधन याद है जिसमें उन्होंने चीन द्वारा तिब्बत के लोगों के व्यक्तित्व को पूरी तरह से समाप्त कर नए प्रकार के साम्राज्यवाद फैलाए जाने की बात कही थी। उनका यह भाषण बाद में बहुत अधिक चर्चित हुआ था। चीन ने तिब्बत को हड़पकर वहां अपना अधिकार ही वहां नहीं कर लिया बल्कि तिब्बतियों को अपने ही देश में अल्पसंख्यक बनाकर उनका निरंतर शोषण भी किया है। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के ओजपूर्ण व्यक्तित्व का आरम्भ से ही गहरा असर अटलजी पर रहा है। कश्मीर पर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के भाषण, उनकी विचारधारा और चिंतन ने अटल जी को शायद आरम्भ से ही प्रेरित किया था। इसलिए उनके चिंतन में यह झलक बार-बार

राज्यपाल कलराज मिश्र

उभरती भी है। वह बगैर किसी औपचारिकता के सीधे विरोधी के पास स्वयं जाकर सहयोग मांग लिया करते थे। यह दृष्टि और सहजता हरेक में होती नहीं है।

अटलजी हिन्दुत्व की विचारधारा से जुड़े ही नहीं थे, उसे बार-बार सार्वजनिक भी किया है। अटलजी ने भारतीय संस्कृति और हिन्दुत्व के सरोकारों में रंगे मन से कभी एक कविता लिखी थी। इस पर आवाजें भी उठी पर वह अपनी व्यंजना पर सदा अटल रहे थे। मुझे लगता है, उनकी वह कविता हिन्दुत्व को एक तरह से व्याख्यायित करती है। उन्होंने हिन्दुत्व को हिन्दुस्तान में ही रूपायित करते थोड़े में ही जैसे बहुत कुछ कह दिया है। पंक्तियां देखें, 'हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय/मैं अखिल विश्व का गुरू महान, देता विद्या का अमरदान/.. समष्टि के लिए व्यष्टि का कर सकता बलिदान'। जो लोग हिन्दुत्व की उदात्ता के गहरे अर्थों को नहीं समझते, उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि हिदूं का अर्थ है, पूरा यह राष्ट्र सहिष्णुता की वह परम्परा जिसमें सनातन संस्कृति के मूल्य गहरे से समाए हुए हैं।

वाजपेयीजी का स्वस्थ संसदीय परम्पराओं से उनका गहरा नाता था। वह सीधे, सहज कहने में विश्वास रखते थे। सदन की परम्पराओं पर भी उनसे कई बार संवाद होता था।

हर बार मुझे यह भी लगता था कि संविधान और उससे जुड़ी संस्कृति के मूल्यों को वह किसी भी स्थिति में बचाए रखने के पक्षधर थे। सदन में मीडिया में स्थान पाने के लिए करने वाली जदोजहद से बहुत बार परेशान हो जाया करते थे। इस पर उनके मुख से व्यंग्यात्मक भाषा भी कई बार सुनी। लोकसभा में जब वह नेता प्रतिपक्ष थे तो बार-बार यह बात कहते थे कि 'सदन में सदस्यगण शोरगुल मचाने को सुर्खियों में आने का सुगम साधन समझते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। किसी विषय पर गहन अध्ययन करने के लिए तथ्य एकत्र करें, तर्क संजोएं।

याद है, प्राय: वह हंसी मजाक में यह भी कहा करते थे कि जैसे मनुष्य को प्यास लगती है वैसे ही राजनेताओं को, जनप्रतिनिधियों को 'छपास' लगती है। वाजपेयीजी जनसंघ की सीट पर उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से चुन कर जब संसद में पहुंचे थे तब नेहरू जी द्वारा योग के अंतर्गत शीर्षासन जैसी कठिन मुद्राएं अखबारों में खूब छपती थी। एक दिन संसद में बहस के दौरान पं. जवाहर लाल नेहरू ने किसी मुद्दे पर अपनी बात बहुत प्रभावी तरीके से रखी। सबने उनके भाषण को सराहा। नेहरूजी ने विपक्ष में बैठे वाजपेयीजी की ओर देखते हुए मुस्कुरा के कहा, अब बताईए, आपका क्या कहना है? अटलजी भी कहां चुप रहने वाले थे। बोले, 'मैं जानता हूं कि पंडित जी शीर्षासन योग करते हैं। करना भी चाहिए पर इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि वो समस्याओं के समाधान को भी उलटे होकर देखे।' इतना कहते ही सदन में ठहाके गूंज उठे थे। मुझे लगता है, वाजपेयी सदन में होते तो वह सदा जीवंत रहता था।

वाजपेयीजी जैसे व्यक्तित्व इस दौर में विरल प्राय: हैं। विचार करता हूं, राजनीति में ऐसे व्यक्तित्व अब रह ही कहां गए हैं जो सबको साथ लेकर चलते हुए भी सदन को अपनी मौजूदगी से सदा रोशन रखें। संसदीय परम्पराओं, संस्कृति और साहित्य की संवेदनशीलता से जुड़ी वह ऐसी शख्सियत थी जिसने राजनीति में रहते हुए भी उसकी दलदल से अपने को दूर रखा। जननायक के रूप में अपनी पहचान बनायी। मेरा सौभाग्य रहा है कि उनसे इतनी निकटता थी कि जब-तब उनसे राजनीति और राजनीति से इतर भी बहुत से विषयों पर संवाद होता रहता था। कभी जब नहीं मिले हुए अधिक समय हो जाता, वह उलाहना भी देते थे। मीठी झिड़कियां, बहुत कुछ सुनना और अपनी ओर से उन्हें सुनाना भी। इतनी सारी बातें, यादें है कि लिखूंगा तो न जाने बात कहां पहुंच जाएगी। सौ बात की एक ही बात कहूंगा कि अटल जी राजनीति में अटल थे और सदा रहेंगे।

कलराज मिश्र,
राज्यपाल, राजस्थान

महात्मा गांधी और ईसाई धर्म

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का अजमेर और ब्यावर के अतिरिक्त राजस्थान के किसी अन्य स्थान पर आगमन नहीं हुआ। अजमेर मेरवाड़ा उस समय केन्द्र शासित क्षेत्र था और स्वतंत्रता सेनानियों की मुख्य गतिविधियों का केन्द्र भी था। प्रदेश के अन्य भू-भाग में राजाओं का शासन था। गांधीजी राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में नहीं आये किन्तु इन क्षेत्रों के स्वतंत्रता सेनानी उनसे निरन्तर संपर्क बनाये रखकर मार्ग दर्शन प्राप्त करते रहते थे।

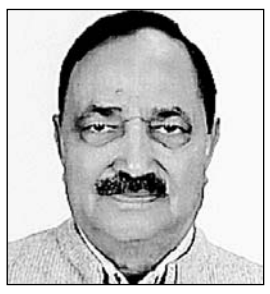

देवी सिंह नरूका

■ स्काटिश मिशन की प्रचारक लेडी किनियर्ड ने ईसाई धर्म अपनाने की मांग की थी

राजस्थान के मूर्धन्य पत्रकार चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय सन् 1940 में सेवाग्राम में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मुख्य पत्र 'नई तालीम' के सहायक संपादक की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है कि सेवाग्राम में पहुंचने के कुछ समय बाद ही उन्हें बापू के विनोदी स्वभाव और लोगों को निरुत्तर करने की अद्भुत क्षमता से साक्षात्कार हुआ। उस समय ईसाइयों के स्काटिश मिशन की प्रबल प्रचारक संभ्रान्त महिला लेडी किनियर्ड सेवाग्राम आईं और उसने बापू को ईसाई धर्म में दीक्षित करने की हठ पकड़ ली। लेडी किनियर्ड की उम्र 90 वर्ष से अधिक थी किन्तु उसमें युवाओं जैसी स्फूर्ति थी। वह लेडी तड़क-भड़क वाली पोशाक धारण करती थी और हाथों में सोने की चूड़ियां और जड़ाऊ अंगूठियां पहनती थीं।

जब वह बापू से ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए जिद करने लगी तब बापू ने उसे समझाया कि वह तो ईसा मसीह के आदेशों को मानते हैं और उन पर अमल भी करते हैं, इसलिए वह तो ईसाई जैसे ही हैं। इस पर लेडी किनियर्ड ने कहा कि वह तो चाहती है कि दीन व ईमान का पवित्र संबंध भी आपके साथ हो, यह तब ही संभव है जब आप बपितस्मा ले लें। तब बापू हंस कर लेडी किनियर्ड की गोदी में जाकर बैठ गये और कहा कि मैं आपको अपनी माँ के समान मानता हूँ। इसके बाद भी वह नहीं मानी, तब बापू ने लेडी किनियर्ड से पूछा कि–विश्व में करोड़ों लोग ईसाई धर्म के अनुयासी हैं, उनमें सच्चे ईसाई कितने लोग हैं?

लेडी किनियर्ड ने जवाब दिया कि–सच्चे ईसाई तो इने-गिरे ही हैं।' इस पर बापू ने कहा कि–'जिस दिन सभी ईसाई सच्चे ईसाई बन जायेंगे, उस दिन वह भी ईसाई धर्म ग्रहण कर लेंगे।' लेडी किनियर्ड के पास इसका कोई उत्तर नहीं था और वह निराश होकर चली गईं।

देवी सिंह नरूका,
वरिष्ठ लेखक व पत्रकार

नागी के शहीदों की याद में आठ दिन तक होगा समारोह

सुदर्शन चक्र डिवीजन और स्थानीय लोगों ने राजस्थान के श्रीगंगानगर और श्रीकरणपुर में की तैयारी

सुदर्शन चक्र डिविजन के अधिकारियों ने रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया।

जयपुर, (कासं)। सुदर्शन चक्र डिवीजन और स्थानीय लोगों ने राजस्थान के श्रीगंगानगर और श्रीकरणपुर को 1971 के नागी के महाकाव्य युद्ध में भारत की जीत के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आठ दिनों तक चलने वाले समारोह के लिए तैयार किया है। नागी दिवस समारोह में शहीदों का आभार व्यक्त करने और सेना और स्थानीय समुदाय के बीच प्रतीकात्मक संबंधों के बारे में युवाओं को जागरूक करने के लिए भारतीय सेना और श्रीगंगानगर के नागरिक मंच द्वारा आयोजित कई कार्यक्रम शामिल होंगे।

24 दिसंबर 2021 को भारत पाक सीमा के करीब साधुवाली कैंट में मैराथन दौड़ आयोजित हो रहा है। 01 दिसंबर से 25 दिसंबर 2021 तक देश भर में प्रविष्टियां प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन मंच पर भारत के

■ 27 को शहीद हुए सैनिकों के परिजनों को सम्मानित किया जाएगा

सभी नागरिकों के लिए एक पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। 27 दिसंबर 2021 को युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों के परिजनों को सम्मानित किया जाएगा।

एक सामूहिक बैंड प्रदर्शन भी आयोजित किया जाएगा जो बहादुरों को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से मार्शल धुन बजाएगा। इस कार्यक्रम में वीर सैनिकों, सेवारत कर्मियों, नागरिक गणमान्य व्यक्तियों, मीडियाकर्मियों और सेना कर्मियों के परिवारों के भाग लेने की प्रोग्राम है। नागी दिवस कार्यक्रम की भव्य परिणति 28 दिसंबर 2021 को नागी युद्ध स्मारक में होगी। कार्यक्रमों में शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए सेना के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा युद्ध स्मारक पर माल्यार्पण करना शामिल होगा। इस कार्यक्रम में युद्ध के दिग्गज और युद्ध के वीर शामिल होंगे।

25/26 दिसंबर 1971 को, पाकिस्तान ने 16 दिसंबर 1971 को युद्धविराम की घोषणा के बाद, नागी में भारतीय क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। नागी ने पश्चिमी मोर्चे के साथ एक भीषण लड़ाई देखी जिसमें हमारी सेना ने पाकिस्तान को हासिल करने के प्रयास को कुंद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिसमें 21 बहादुर दिलों ने सर्वोच्च बलिदान दिया और राष्ट्र के सम्मान की रक्षा की।

राशिफल शनिवार 25 दिसम्बर, 2021

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2078, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रविवार प्रात: 5:05 तक, प्रीति योग दिन 11:25 तक, गर करण प्रात: 7:52 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज रवि योग रविवार प्रात: 5:05 तक है। भद्रा रात्रि 8:10 से रविवार प्रात: 8:09 तक है। आज क्रिसमस दिवस (ईसा जयन्ती) बड़ा दिन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:35 से 9:52 तक, चर 12:27 से 1:44 तक, लाभ-अमृत 1:44 से 4:14 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:36

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए समय अच्छा है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। भावनात्मक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। मन:स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष और भय बना रहेगा।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। आवश्यक कार्यों को टालना पड़ सकता है। नवीन कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

मुक्ताकाशी रंगमंच पर वसावा होली नृत्य व दर्पण सभागार में महाराष्ट्र के शेतकारी की प्रस्तुति

रंगमंच पर प्रस्तुतियों की बहार, अपने ही रंग में लौटने लगा उत्सव

उदयपुर, (कासं)। शिल्पग्राम उत्सव धीरे-धीरे अपने रंग में रंगना शुरू हो गया है। चौथे दिन उत्सव में जहां पर्यटकों व आगंतुकों की वृद्धि देखी गई वहीं मुक्ताकाशी रंगमंच व दर्पण सभागार में अलग-अलग राज्यों से आए कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दी।

दोपहर में मुक्ताकाशी रंगमंच पर गुजरात की वसावा जनजाति का वसावा होली नृत्य हुआ जिसमें कलाकारों ने चित्ताकर्षक संरचनाएं बनाई व अपने नर्तन से उत्साह भरा। सिद्धी धमाल नृत्य की प्रस्तुति को दर्शकों द्वारा सराहा गया वहीं ढोलकी, मुगरवान, शंख की ध्वनि पर तीव्र लयकारी पर दर्शकों ने करतल ध्वनि से संगत करते हुए कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

दर्पण सभागार में महाराष्ट्र के कलाकारों की प्रस्तुतियों ने मनमोह लिया। इस अवसर पर महाराष्ट्र का शेतकारी नृत्य वहां के कृषक समुदाय से जुड़ा नृत्य था तो दमण के कलाकारों ने माछी नृत्य समुदाय द्वारा किये जाने वाले मत्स्य आखेट के दृश्यों को मंच पर साकार किया। लावाणी महाराष्ट्र की समृद्ध परंपरा है जिसमें शास्त्रीय नृत्य संगीत का अनूठा मिश्रण होता है। मराठी नर्तकियों ने लावणी शैली में अपनी नृत्य मुद्राओं से लुभाया।

शिल्पग्राम उत्सव में मुक्ताकाशी रंगमंच पर वसावा होली नृत्य की प्रस्तुति देते गुजरात के कलाकार।

■ शिल्पग्राम उत्सव में चौथे दिन पर्यटकों व आगंतुकों की बढ़ोतरी देखी गई

शिल्प बाजार के वस्त्र संसार में पसंदीदा वस्त्रों की खरीददारी करते महिलाएं नजर आई। महिलाओं का रूझान सलवार सूट, साड़ियों, आर्टीफिशियल ज्वैलरी, घर की सजावट, लैपम शेड्स, लालटेन, टेराकोटा आइटम्स, वूलन कारपेट आदि की तरफ रहा वहीं मेले में आने वाले युवाओं का आकर्षण विभिन्न फूड स्टॉल्स रहे जहां पिज्जा, बरगर, साउथ इंडियन फूड, पाव भाजी, आइसक्रीम पर जोर रहा।